आराधना के लिए मिलने लगे। 135 ई० मे (यीशु की मृत्यु के लगभग 100 वर्ष बाद) रोमी शासक हदरियान ने सब्त तथा यहूदी धर्म को गैर कानूनी घोषित कर दिया। रोमी सरकार ने सब्त मानने वाले बहुत से लोगों का मार डाला। उस समय के बाद अधिकांश मसीहियों ने सातवें दिन को नहीं माना।155 ई० में, मसीही धार्मिक गुरू जस्टिन आर्ट्अँ ने लिखा, "रविवार वह दिन है जब हम सब आम सभा करते हैं क्यों कि यह पहला दिन है परमेश्वर ने..... संसार की रचना की।"

अधिकांश मसीही अब तक सप्ताह के पहिले दिन आराधना करने की परम्परा को मानते हैं। कुछ मसीही सदैव परमेश्वर की आज्ञा को मानते रहे हैं और सातवें दिन को सब्त के रूप में मनाते हैं। हालाँकि वे मसीही जो परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं, अक्सर कष्ट उठाते हैं। 365 ई० में, लौदीकिया की सभा में, कैथलिक चर्च ने फरमान जारी किया : "मसीहियों को सब्त के दिन विश्राम करके यहूदीवाद नहीं फैलाना चाहिए, बल्कि उस दिन परमेश्वर को सम्मान देने के स्थान पर उनको काम करना चाहिए, और अगर वे चाहे तो दूसरे मसीहियों (जो सब्त नहीं मानते) की तरह विश्राम कर सकते हैं (कैनन 29)।

ध्यान दें कि कुछ मसीही मसीह की मृत्यु के 300 वर्ष बाद भी सब्त रख रहे हैं।

जब यीशु इस संसार में थे तब उन्होंने धर्म गुरूओं से कहा, "तुम अपनी परम्पराओं को मानने के लिए परमेश्वर की आज्ञा कैसे अच्छी तरह टाल देते हो" (मरकुस 7:9) । आज अधिकांश मसीही परमेश्वर की आज्ञाओं को अस्वीकार कर देते हैं और अपनी खुद की परम्पराओं को मानते हैं। यीशु जानते थे कि बहुत से होंगे जो कहेंगे कि वे उसके पीछे चलते हैं, लेकिन उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।(मत्ती 7:21)। परमेश्वर उनको पुरस्कृत करेगा जो उस पर विश्वास करते हैं और उसकी आज्ञा को मानते हैं। परमेश्वर ने कभी भी सब्त को नहीं बदला। मनुष्य ने विश्राम के लिए दूसरा दिन चुना। लेकिन मनुष्य किसी दिन को पवित्र नहीं बना सकता। परमेश्वर ने सातवाँ दिन चुनाव और उसे पवित्र बनाया। उसने कभी भी पहले दिन को पवित्र नहीं बनाया। आज भी सब्त शुक्रवार सूर्यास्त तक होता है।

परमेश्वर ने सबको सातवाँ दिन विश्राम करने की आज्ञा क्यों दी? सब्त दस आज्ञाओं में से एक आज्ञा क्यों है? एक कारण कि परमेश्वर ने सब्त बनाया यह है कि वह अपने बनाये लोगों से एक अच्छा सम्बन्ध रखना चाहता है। सब्त के दिन हम अपने रोज के कामों से आजाद रहते हैं, इसलिए हमारे पास समय होता है कि हम परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध बेहतर करें। परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम और लोगों के साथ, जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, सब्त के दिन मिलें, ताकि हम परमेश्वर की बातों को सीख सकें और एक दूसरे को प्रोत्साहित करें (लैव्यव्यवस्था 23:3, इब्रानियों 10:25) परमेश्वर ने सातवें दिन का सब्त इसलिए नहीं बनाया जिससे पता चल सके कि कौन उसके लोग हैं। (निर्गमन 31:13)।

सब्त हर एक को आराम देता है जिसकी उन्हें अपने काम के बाद जरूरत होती है। प्रत्येक सप्ताह के अन्त में यह आराम का समय हमें यह सिखाता है कि अन्त के समय यीशु मसीह इस संसार में एक हजार वर्ष के लिए शान्ति स्थापित करेगा (इब्रानियों 4:1-11, प्रकाशित वाक्य 20:4-6) उस समय हर एक जन परमेश्वर के सब्त को मानेगा : " फिर ऐसा होगा कि एक नये चाँद से दूसरे नये चाँद के दिन तक और एक विश्राम दिन से दूसरे विश्राम दिन तक समस्त प्राणी मेरे सामने दण्डवत करने को आया करेगें, यहोवा का वचन है" (यशायाह 66:23)।

परमेश्वर ने सातवें दिन को पवित्र बनाया। सही सब्त कभी नहीं बदला। परमेश्वर हमसे कहता है, "तू विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना (निर्गमन 20:8)। आप क्या करेंगे? क्या आप उस दिन को मानेंगे जो परमेश्वर ने चुना है?

To Learn more about the true Sabbath, ask us to send you our free booklet Sunset to Sunset-God's Sabbath Rest. You also might want to read our booklet The Ten commandments. All of our booklets are free.

You can request or download our free booklets at our web site: **www.gnmagazine.org**, or you can write to

United Church of God
P.O. Box 541027
Cincinnati, OH 45254-1027

E-mail:info@ucg.org

शनिवार या रविवार

क्या परमेश्वर परवाह करता है?

पहले मसीही सप्ताह के सातवें दिन आराधना किया करते थे लेकिन अब अधिकतर कलीसियाँ सप्ताह के प्रथम दिन प्रार्थना करती हैं। यह दिन कैसे बदला ? क्या परमेश्वर परवाह करता है कि आप किस दिन प्रार्थना करते हैं?

क्या सप्ताह का एक दिन पवित्र है? यदि कोई दिन है तो वह कौन सा है? अधिकतर मसीही विश्वास करते हैं कि रविवार का दिन पवित्र है जब कि कुछ शनिवार को विश्राम दिवस मानते हैं। कौन सही है? क्या इन दोनों दिनों में कोई एक दिन पवित्र है।?

बाइबिल सिखाती है कि जब परमेश्वर ने इस संसार को बनाया तो उसने सप्ताह का एक दिन विश्राम के लिए दिया। "और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता है, सातवें दिन समाप्त किया और उसने अपने किये हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया" (उत्पत्ति 2:3)

परमेश्वर ने सातवें दिन को विश्राम के लिए पवित्र ठहराया – एक दिन जिसे बाइबिल "सब्त" कहती है।

2500 वर्ष बाद, परमेश्वर ने इस्राएल के साथ एक वाचा बाँधी और उसने उन्हें दस आज्ञाएँ दी। उनमें से एक आज्ञा है कि प्रत्येक जन सातवें दिन विश्राम करे। " तू विश्रम के दिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना, परन्तु सातवाँ दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्राम दिन है। उसमें न तो तू किसी भाँति का काम करना, ओर न तेरा बेटा, न तेरी बेटी,न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे प्रभु न कोई परदेसी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्यों कि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उसमें है,सबको बनाया और सातवें दिन विश्राम किया, इस कारण यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया" (निर्गमन 20:8-11)"।

दस आज्ञाएँ नये नियम नहीं थे। सब्त का दिन कोई नया नियम नहीं था। परमेश्वर ने लोगों को याद दिलाया कि उसने सब्त को एक पवित्र दिन बनाया जब उसने संसार की रचना की।

बहुत लोग सोचते हैं कि जो लोग इस्राएलियों से पहिले थे, जैसे अब्राहम, सब्त और परमेश्वर की अन्य आज्ञाओं के बारे में नहीं जानते थे। लेकिन बाइबिल स्पष्ट रूप से इस बात को बताती है कि परमेश्वर ने आरम्भ से, अब्राहम के जन्म के बहुत पहले सब्त को पवित्र बनाया था। परमेश्वर ने यह भी कहा "क्यों कि अब्राहम ने मेरी मानी और जो मैंने उसे सौंपा था उसको और मेरी आज्ञाओं, विधियों और व्यवस्था को पालन किया" (उत्पत्ति 26:5) । वे सब्त के विषय में पहले से जानते थे – शायद अपने पूर्वज अब्राहम के समय से।

बाइबिल में सातवें दिन के 24 घण्टे हैं। शुक्रवार के सूर्यास्त से शनिवार के सूर्यास्त के बीच में। कुछ कलैण्डर रविवार को सातवाँ दिन दिखाते हैं परन्तु बाइबिल में शनिवार सातवाँ दिन है।

क्या यीशु ने सब्त को बदला?

बहुत से मसीहियों का विश्वास है कि मसीह ने सब्त को समाप्त कर दिया, इसलिए मसीही किसी भी दिन को प्रार्थना के दिवस के रूप में चुन सकते हैं। कुछ मसीही समझते हैं कि अब रविवार जो कि सप्ताह का पहला दिन है, पवित्र है। क्या मसीही ने सब्त को बदला या समाप्त कर दिया ?

बहुत से लोग विश्वास करते हैं कि जब यीशु मरा, उसने परमेश्वर के नियमों को और सब्त को अपनी मृत्यु से समाप्त कर दिया। लेकिन यीशु ने सिखाया – "यह न समझों, कि मैं व्यवस्था या भविष्य वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ। क्यों कि मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाये तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरे हुए नहीं टलेगा। इसलिए जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलायेगा, परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उनहें सिखएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलायेगा" (मत्ती 5:17–19)।

यीशु ने सिखाया कि प्रत्येक जन को वही सब आज्ञाएँ माननी चाहिए जो परमेश्वर ने अब्राहम तथा इस्राएलियों को सिखायीं थी।

यीशु ने सब्त के दिन को किसी दूसरे दिन में नहीं दिला। यीशु ने हमेशा सातवें दिन को सब्त रखा। जैसे लूका 4:16 कहता है –

"फिर वह नासरत में आया, जहाँ पोसा गया था, ओर अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ" उसके बाद "फिर वह गलील के कफरनहूम नगर को गया और सब्त के दिन लोगों को उपदेश दे रहा था"। यीशु यहूदियों की तरह इस दिन को हमेशा मन्दिर या आराधनालय जाया करते थे।

कुछ धार्मिक गुरू कहते थे कि यीशु ने कभी भी सब्त को नहीं रखा क्यों कि उस दिन वह बीमारों को चंगा किया करता था। यीशु ने उनकी आलोचना की क्यों कि वे सब्त को सही प्रकार से रखना नहीं जानते थे।

यीशु ने पूछा "तुम में से ऐसा कौन हे जिसकी एक भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गढ्ढे में गिर जाये, तो वह उसे पकड़कर न निकाले? भला, मनुष्य का मोल भेड़ से कितना बढ़कर है। इसलिए सब्त के दिन भलाई करना उचित हे" (मत्ती 12:11,12)। यीशु ने न तो कभी सब्त को बदला न ही उसका समाप्त किया। उसने लोगों को उसे उचित तरह से मनाना सिखाया।

मसीह के चेले किस दिन को मानते थे?

यीशु की मृत्यु के बाद, उसके चेले सातवें दिन विश्राम करने की आज्ञा को मानते रहे। "उन स्त्रीयों ने जो उसके साथ गलील से आयींथी, पीछे-पीछे जाकर कब्र को देखा और यह भी कि उसका शव किस रीति से रखा गया है। तब उन्होंने लौटकर सुगन्धित वस्तुएँ और इत्र तैयार किया और सब्त के दिन उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया" (लूका 23:55–56)। कई वर्षों तक मसीही यहूदियों की तरह उसी दिन को सब्त के रूप में रखते रहे।

प्रेरित पौलुस भी सदैव सब्त रखा करता था। कुरिन्थुस शहर में पौलुस "प्रत्येक सब्त को आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को समझाने का प्रयत्न करता (प्रेरितों के काम 18:4)"। पौलुस जहाँ कहीं भी गया उसने सब्त को माना। अधिक उदाहरणों के लिएप्रेरितों के काम13:14, 42, 44, 16:13 तथा 17:2 को पढें। कुछ लोग विश्वास करते हैं कि पौलुस ने सिखाया कि लोग केवल परमेश्वर पर विश्वास करें और उन्हें सब्त रखने की आवश्यकता नहीं है।

यह सत्य नहीं है। पौलुस ने कहा "तो क्या हम विश्वास के द्वारा व्यवस्था को व्यर्थ ठहराते हैं? कदापि नहीं! वरन् व्यवस्था को स्थिर करते हैं" (रोमियों 3:31) रोमियो 2:31) तथा 7:12 को भी पढ़ें। पौलुस ने लोगों को परमेश्वर की व्यवस्थाएँ मानना सिखाया।

कुछ मसीही बाइबिल में रविवार को मिलने या प्रार्थना करने की परम्परा का सहारा लेने की कोशिश करते हैं। बहुत से मसीही कहते हैं कि 1 कुरिन्थियों 16:2 दिखाता है कि पहिले मसीही रविवार को मिला करते थे। लेकिन यह पद प्रार्थना-सभा के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहता है। पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों से प्रत्येक रविवार को कुछ न कुछ बचाने को कहा ताकि यहूदियों में रहने वाले भाइयों को मदद भेजी जा सके क्यों कि यहूदियों में अकाल पड़ा था। पौलुस ने रविवार को प्रार्थना करने विश्राम करने के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा। कुरिन्थुसके लोग शनिवार के दिन मिला करते थे, रविवार को नहीं प्ररितों 18:1–11।

कुछ लोग कहते हैं कि प्ररितों 20:7 के अनुसार लोग आराधना के लिए मिलते थे। यह पद कहता हे, "सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तब पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने को था, उनसे बातें कीं, और आधी रात तक बातें करता रहा।" यह कोई कलीसिया की आराधना सभा नहीं थी। लोग भोज के लिए आये थे। रोटी तोड़ने का अर्थ है भोजन करना (देखें लूका 24:30, प्रेरितों 27:35, विलापगीत 4:4)। ध्यान दें कि यह भोज और पौलुस का वचन रात के समय थे (प्रेरितों 20:7,8,11)। बाइबिल में प्रत्येक दिन सूर्यास्त से शुरू होता है – इसलिए 'पहले दिन' का अंधेरा शनिवार की रात है। यह कोई रविवार की आराधना सभा नहीं थी। पौलुस और उसके चेलों ने शनिवार रात को भोज किया और बातें की। अगली सुबह, रविवार को पौलुस ने विश्राम नहीं किया। वह लगभग 20 मील (32 कि.मी.) अस्सुस नगर को पैदल गया। पौलुस हमेशा शनिवार को सब्त रखता था, रविवार को वह काम करता था, बाइबिल में ऐसी कोई आज्ञा नहीं है जो रविवार को पवित्र बनाती है। और बाइबिल में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है कि कभी किसी ने शनिवार को सब्त रखा।

किसने परमेश्वर के विश्राम दिवस को बदला?

जब मसीह के शुरू के अनुयायियों ने मृत्यु हो गयी, तब लोगों ने विश्राम दिवस (सब्त) को शनिवार से बदलकर रविवार कर दिया। बहुत से मसीही अपने आपको यहूदियों से अलग दिखाना चाहते थे इसलिए वे शनिवार के स्थान पर रविवार को